Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 04, (सितम्बर, 2024)
पृष्ठ संख्या: 47–48

सरसों की फसल में कीट एवं रोग प्रबंधन

डॉ. रुद्र प्रताप सिंह एवं डॉ. लक्की शर्मा
कृषि विज्ञान संकाय,
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर,
राजस्थान, भारत।

Email Id: – rudra.agento@gmail.com

सरसों एक महत्वपूर्ण तिलहन फसल है, जिसे मुख्य रूप से तेल निकालने के लिए उगाया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम 'ब्रैसिका' है। सरसों की खेती विशेषकर भारत, पाकिस्तान, चीन, और कनाडा में बड़े पैमाने पर की जाती है। भारत में सरसों की खेती मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल में होती है।

सरसों की खेती रबी मौसम (सर्दियों) में की जाती है। इसे अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी में उगाया जाता है। इसकी बुवाई अक्टूबर–नवंबर में की जाती है और फसल की कटाई मार्च–अप्रैल में होती है। सरसों की फसल के लिए 20–25 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे उपयुक्त माना जाता है।

सरसों की फसल भारतीय कृषि के लिए एक महत्वपूर्ण फसल है, लेकिन इसे कई प्रकार के कीट नुकसान पहुंचा सकते हैं। इन कीटों का समय पर प्रबंधन न किया जाए तो फसल को भारी नुकसान हो सकता है। नीचे कुछ प्रमुख कीट और उनके नियंत्रण के उपाय बताए जा रहे हैं:

कीट

1. सरसों की पत्ती खाने वाला कीट

पहचान: यह छोटे हरे रंग के कीट होते हैं जो समूह में पत्तियों पर दिखाई देते हैं। यह कीट पत्तियों का रस चूसते हैं जिससे पत्तियां मुरझा जाती हैं और पौधा कमजोर हो जाता है।

नियंत्रण:

- नीम के तेल का छिड़काव करें।
- फसल के शुरुआती अवस्था में इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें।
- सफेद मखमली कीट के प्राकृतिक शत्रुओं जैसे लेडीबर्ड बीटल का उपयोग करें।

2. तना बेधक कीट

पहचान: ये कीट तने के भीतर घुसकर उसे खाते हैं जिससे पौधे का तना कमजोर हो जाता है और वह टूट जाता है।

नियंत्रण:

- फसल के आसपास की जगह को साफ रखें।
- फसल चक्र अपनाएं।
- शुरुआती अवस्था में क्यूनालफोस 25 ईसी का छिड़काव करें।

3. अलसी का कीट

पहचान: ये कीट पीले और काले धारी वाले होते हैं जो पत्तियों और तनों को नुकसान पहुंचाते हैं।

नियंत्रण:

- फसल की कटाई के बाद खेत को अच्छी तरह जोतें ताकि कीटों के अंडे नष्ट हो जाएं।
- जैविक नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा कीट का उपयोग करें।
- क्लोरोपायरीफोस 20 ईसी का छिड़काव करें।

4. हरा टिड्डा

पहचान: ये कीट हरे रंग के होते हैं और पत्तियों का रस चूसते हैं जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती हैं।

नियंत्रण:

- फसल की निगरानी नियमित रूप से करें।
- नीम आधारित उत्पादों का छिड़काव करें।
- प्रारंभिक अवस्था में इमिडाक्लोप्रिड का उपयोग करें।

5. जड़ की मक्खी

पहचान: ये कीट पौधे की जड़ों पर हमला करते हैं जिससे पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण:

- खेत की स्वच्छता का ध्यान रखें।
- रासायनिक नियंत्रण के लिए फिप्रोनील का उपयोग करें।

सामान्य सुझाव:

- जैविक कीटनाशकों का उपयोग अधिक करें।
- फसल चक्र अपनाएं और विभिन्न फसलों का रोपण करें।
- कीटों के प्राकृतिक शत्रुओं को संरक्षण दें।

6. पत्ती सुरंगक:

लक्षण: यह कीट पत्तियों में सुरंग बनाकर नुकसान पहुंचाता है, जिससे पत्तियों में सफेद लाइनें दिखाई देती हैं।

नियंत्रण:

- प्रभावित पत्तियों को हटाकर नष्ट करें।
- बुवेरिया बेसियाना या मेटारिजियम एनिसोप्ले का छिड़काव।

प्रमुख रोग:

1. रंग रोग :

लक्षण: पत्तियों, तनों, और फलों पर काले धब्बे दिखाई देते हैं।

नियंत्रण:

- मैनकोजेब (2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव।
- रोगरोधी किस्मों का चयन करें।

2. फफूंद रोग:

लक्षण: पत्तियों के नीचे सफेद फफूंद की परत बनती है और पत्तियां पीली होकर गिर जाती हैं।

नियंत्रण:

- मेनकोजेब या कार्बेंडाजिम का छिड़काव।
- रोगरोधी किस्मों का चयन करें।

3. तना गलन:

लक्षण: तनों में सड़न उत्पन्न होती है और पौधे गिर जाते हैं।

नियंत्रण:

- अच्छी जल निकासी वाली भूमि में खेती करें।
- बुवाई से पहले बीजों का उपचार करें।

सामान्य प्रबंधन:

- **फसल चक्र:** सरसों की फसल को लगातार एक ही खेत में न उगाएं। फसल चक्र अपनाकर मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखें।
- **साफ–सफाई:** खेत में खरपतवारों और फसल अवशेषों को हटाकर साफ–सफाई रखें।
- **उर्वरक प्रबंधन:** संतुलित उर्वरकों का उपयोग करें ताकि पौधों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़े।
- **सिंचाई प्रबंधन:** अधिक या कम सिंचाई से बचें और जल निकासी का ध्यान रखें।

इन उपायों को अपनाकर सरसों की फसल को कीट एवं रोगों से बचाया जा सकता है और उत्तम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

सरसों की फसल में कीट एवं रोगों का प्रबंधन के लिए जैविक और रासायनिक दोनों उपायों का समुचित उपयोग करना आवश्यक है। सही समय पर उचित उपाय करने से कीट एवं रोगों के प्रकोप को नियंत्रित किया जा सकता है और अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।